MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

6th ANNIVERSARY

Peer Reviewed Multilingual Refereed Journal

विदर्भ वार्ता®

April To June 2025
Issue 55, Vol-04

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

MAH/MUL/ 03051/2012 **ISSN :2319 9318**

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2025
Issue 55, Vol-04

Date of Publication
01 April 2025

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

INDEX

01) वंचितों के उद्धार की सार्थक अभिव्यक्ति: 'रश्मिरथी'
प्रो. (डॉ.) कामायनी गजानन सुर्वे ||10

02) जसिंता केरकेट्टा की कविताओं में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन
प्रो. (डॉ.) विनायक बापू कुरणे ||15

03) हिंदी आत्मकथाओं में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन समस्याएँ एवं समाधान
डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे ||18

04) जगदीशचंद्र जी के उपन्यासों में चित्रित शोषितों का संघर्ष
प्रो. (डॉ.) सविता शिवलिंग मेनकुदळे ||25

05) वर्तमान कहानी साहित्य में वंचितों का संघर्ष: विविध आयाम
डॉ. शोभा एम. पवार ||29

06) 'कोर्टमार्शल' नाटक के रामचंदर का संघर्ष
प्रा. डॉ. दिलीपकुमार कसबे ||31

07) 'यह अंत नहीं' उपन्यास में शोषित एवं वंचित जीवन
डॉ. संदीप जोतिराम किर्दत ||34

08) २१ वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर मन का आक्रोश
डॉ. अशोक मोहन मरळे ||39

09) शिकंजे के दर्द से गुजरते हुए..
डॉ. वैशाली खेडकर ||43

10) आम आदमी के शोषण की पीडा से साक्षात्कार —'बकरी' नाटक
प्रो. (डॉ.) नितीन धवडे ||46

11) २१वीं सदी के नाटक में शोषित किसान जीवन की त्रासदी
डॉ. सचिन मदन जाधव ||49

12) मिथिलेश्वर के कहानी साहित्य में वंचित एवं शोषितों का चित्रण
प्रा. डॉ. संदीप तानाजी कदम ||54

www.vidyawarta.com

26) हिंदी–साहित्य और सिनेमा में वंचित एवं शोषित का चित्रण
कॅप्टन डॉ. रविंद्र पाटील ||104

27) हिंदी सिनेमा में वर्तमान सामाजिक विसंगतियों का यथार्थ चित्रण
डॉ. रगडे परसराम रामजी ||108

28) हिंदी नाटक साहित्य में चित्रित नारी शोषण
डॉ. नीता पोपट साठे ||113

29) सुषम बेदी के 'मोरचे' उपन्यास में चित्रित शोषित नारी
डॉ. नेहा अनिल देसाई ||115

30) हिंदी फिल्मों में चित्रित संघर्षशील नारी
डॉ. उत्तम राजाराम आळतेकर ||118

31) उदयशंकर भट्ट की एकांकी 'मंदिर के द्वार पर' में दलित विमर्श
डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे ||120

32) हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन
प्रा. डॉ. जितेंद्र वामन बनसोडे ||123

33) हिंदी आत्मकथा में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन
डॉ. नितीन हिंदुराव कुंभार ||126

34) नागार्जुन की कविताओं में वंचित एवं शोषितों का चित्रण
प्रा. शौकत आतार ||129

35) 'आना इस देश' उपन्यास में चित्रित शोषित पात्र और उनका संघर्ष
सुशील अशोक हुपरीकर ||132

36) 'चौधराहट' उपन्यास का शोषित नायक–लोटन
मारुती दत्तात्रय नायकू ||136

37) डॉ. सुधाकर मिश्र की कविताओं में चित्रित शोषितों का जीवन
विकास सुरेश शेटे–डॉ. अशोक मोहन मरळे ||140

www.vidyawarta.com/ — http://www.printingarea.blogspot.com

चित्रित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यासों में स्त्री शोषण की बातों को व्यापक रूप से उठाया गया है।

निष्कर्ष :— हिंदी उपन्यास साहित्य ने शोषित एवं वंचित समाज की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया है। ये उपन्यास केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के दस्तावेज भी हैं। इनके माध्यम से हम समाज में व्याप्त अन्याय को समझ सकते हैं और एक न्यायसंगत समाज की दिशा में बढ़ सकते हैं।

हिंदी उपन्यास साहित्य ने वंचित और शोषित वर्गों की वास्तविकता को समाज के सामने लाने का कार्य किया है। प्रेमचंद से लेकर दलित साहित्यकारों तक, अनेक लेखकों ने इस वर्ग के संघर्ष, पीड़ा और विद्रोह को अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है। साहित्य न केवल समाज का दर्पण होता है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बनता है। अत: हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन न केवल ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज को जागरूक करने और न्याय की भावना को प्रोत्साहित करने में भी सहायक है।

हिंदी उपन्यास साहित्य ने वंचित वर्ग की पीड़ा, संघर्ष, सामाजिक असमानता और उनके अधिकारों की लड़ाई को गहराई से चित्रित किया है। समय के साथ इन उपन्यासों में सिर्फ पीड़ा का चित्रण नहीं, बल्कि वंचितों की चेतना, प्रतिरोध और संघर्ष भी सामने आए हैं। इन साहित्यिक कृतियों ने समाज को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आज भी यह परंपरा अबाधित है।

संदर्भ :—

१. फणीश्वरनाथ रेणु—मैला आँचल
२. मुंशी प्रेमचंद. गोदान, साहित्य भवन, १९३६
३. ओमप्रकाश वाल्मीकि. जूठन, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९९७
४. मन्नू भंडारी. आपका बंटी, राजकमल प्रकाशन, १९७१
५. शरण कुमार लिंबाले. हिंदू, नवयुग प्रकाशन,२०१०

⌘⌘⌘

33

हिंदी आत्मकथा में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन

(नारी विमर्श के विशेष संदर्भ में)

डॉ.नितीन हिंदुराव कुंभार
हिंदी विभाग
डॉ.पतंगराव कदम महाविद्यालय,
रामानंदनगर(वुर्ली),त.पलूस,जि.सांगली(महाराष्ट्र)

शोध सार :—

पिछले कुछ दशकों में जिन महिला कथाकारों ने अपनी स्वतंत्र सोच से कथा साहित्य में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है, उनमें प्रभा खेतान का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' अब तक हमारे समाज में स्त्रियों के प्रति जो मानसिकता रही है उस पर प्रश्न उठाती है और स्त्रियों के मुद्दों पर नए दृष्टिकोण से विचार करने को प्रेरित करती है। यह भी एक तथ्य है कि स्त्री अस्मिता के प्रश्नों को गंभीरता से अन्य साहित्यिक विधा की तुलना में आत्मकथा में ही उठाया गया है तथा लेखिकाओं ने अपने स्वतंत्र अस्मिता को उजागर किया है। इस आलेख में मूल रूप से प्रभा खेतान की आत्मकथा ''अन्या से अनन्या'' में चित्रित वंचित एवं शोषित नारी को प्रस्तुत किया है स प्रभा खेतान की यह आत्मकथा नारी मुक्ति का स्वर समेटे हुए हैं।

'अन्या से अनन्या' प्रभा खेतान की महत्वपूर्ण आत्मकथा है। इसमें लेखिका ने संवेदना को आधार बनाकर अपने जीवन के भोगे हुए यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। प्रभा का जन्म रूढ़िवादी मारवाड़ी परिवार में हुआ था जिसकी कठोर व्यवस्था के बीच लेखिका का मन, लगातार तड़पता रहता है और उन्हें यह अहसास दिलाया जाता है कि वह स्त्री है, जिसका

दायरा परिधि के भीतर है, बाहर नहीं। फिर भी उन्होंने इस दायरे को कभी स्वीकार नहीं किया बल्कि अपनी एक नयी अस्मिता गढ़ी।

आत्मकथा में प्रभा ने बचपन से ही नारी के प्रति विकृत मानसिकता रखने वाले समाज का पर्दाफाश किया है साथ ही साथ बताया है कि स्त्री के शत्रु उसके विश्वासी और अपने ही होते हैं। बचपन में प्रभा स्वयं शोषण का शिकार बनती है और उन्हें यह बात सबसे छिपाने की सीख दी जाती है, जबकि दोष उनका नहीं होता। हमारे समाज में पुरुषवादी सोच के तहत सारे अपमान, घृणा का पात्र हमेशा नारी ही बनती है और पुरुष अपराध करके भी सम्मानित होते हैं। संक्षेप में 'अन्या से अनन्या' लेखिका प्रभा खेतान के जीवन की ऐसी कहानी है, जिसमें नारी के वंचित एवं शोषित जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है।

बीज शब्द:— समाज, नारी, वंचित, शोषित, यथार्थ, स्वतंत्रता, अस्मिता स

आलेख :—

प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में बचपन में अपने साथ परिवार में किए जा रहे तिरस्कार की चर्चा की है तथा इससे उत्पन्न पीड़ा को व्यक्त किया है। कहीं न कहीं इसके पीछे रंगभेद की मानसिकता काम करती है। इसका वर्णन करते हुए वह कहती हैं ''मैं उपेक्षिता थी, आत्मसम्मान की कमी ने मेरा जिंदगी भर पीछा किया।... माँ ने प्यार नहीं किया, यह तो समझ रही थी, क्योंकि मैं ठहरी काली। माँ की तरह गोरी नहीं। मैं बहुत शांत, गीता की तरह स्मार्ट नहीं, मुँह पर फटाफट जवाब नहीं दे पाती, लेकिन मैं पढ़ने में तो अच्छी थी, क्या यह काफी नहीं था।''१ आज भी लड़कियों के प्रति इस प्रकार की मानसिकता समाज में विद्यमान है।

प्रभा का बचपन अपनों के बीच भी अनाथ था पर दाई माँ के लाड़ प्यार ने उन्हें संवेदनशील बनाये रखा। दाई माँ से लेखिका का काफी गहरा जुड़ाव था, क्योंकि उन्हें अपनी माँ से वह प्यार और अपनापन नहीं मिला। अपनी माँ के और अपने रिश्ते को परिभाषित करते हुए वह लिखती हैं ''कैसा अनाथ बचपन था। अम्मा ने कभी गोद में लेकर मुझे चुमा नहीं। मैं चुपचाप घंटों उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती। शायद अम्मा मुझे भीतर बुला लें। शायद हाँ, शायद अपनी रजाई में सुला लें। मगर नहीं, एक शाश्वत दूरी बनी रही हम दोनों के बीच। अम्मा मेरी बातों को समझ नहीं पाती थी।''२ ऐसी बच्ची के कष्ट का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है, जिसने बचपन से ही अलगाव की त्रासदी झेली है।

लेखिका ने अपने स्तर पर स्त्री अस्मिता की लड़ाई लड़ी और परंपरागत रुढ़ियों का विरोध किया। यह आत्मकथा प्रेम की दुखद गाथा भी है जिसमें प्रभा परंपरागत शादी के ढाँचे से बाहर जाकर एक ऐसे पुरुष से प्रेम करती है, जो शादीशुदा है और बच्चों का पिता भी। प्रभा सिर्फ भावनात्मक स्तर पर उनसे सहयोग चाहती है क्योंकि आर्थिक स्तर पर वह स्वनिर्भर है। कभी भी प्रभा जी उनसे पैसे का सहयोग नहीं चाहती, पर फिर भी डॉक्टर उन्हें सहयोग न करके पीड़ा ही देता है। प्रभा और डॉक्टर के रिश्ते को लेकर प्रभा जी से बार बार स्पष्टीकरण माँगा जाता है पर डॉक्टर से कोई कुछ नहीं पूछता। बल्कि सारी स्थितियों के लिए प्रभा को दोषी माना जाता है। अतः प्रभा प्रेम के प्रति समर्पण भाव रखती है उसमें कोई छुपाव या दुराव नहीं करती, बल्कि इन बातों को साहस के साथ स्वीकार करती है, क्योंकि वह इस रिश्ते को गलत नहीं मानती इसी कारण उसे पूरे मन से निभाती है।

लेखिका ने इस बात पर आपत्ति जताई है कि स्त्री को अकेले रहने का अधिकार नहीं, अपना अलग फ्लैट खरीदकर इस बात की पुष्टि की है कि स्त्री भी चाहे तो अलग अकेले रह सकती है। लागों ने इस पर काफी कुछ उन्हें समझाया पर वह अपनी बात पर अडिग रही। इस संबंध में शशिकला रॉय लिखती है— ''क्या साहित्यकारों (स्त्री) के पास ऐसी जुबा है, जिसमें वे दूसरों के साथ—साथ अपनी खबर भी ले। प्रभा जी अपने रिश्ते की वैधता को लेकर समाज के सामने कई प्रश्न उपस्थित करती है और उन्हें करना भी चाहिए। क्योंकि हर हाल में हम

सब पहले मनुष्य है। क्या सारी वैधता सात फेरें से ही मिलती है।''३ प्रभा विवाह संस्था की कठोर आलोचना करती है और अपने रिश्ते को उचित मानती है। वह कहती है– 'मेरी राय में विवाह एक ओवरडेटेड संस्था है, मैं इस संस्था को ज्यादा तरजीह देने से इनकार करती हूँ।''४ अर्थात विवाह संस्था में स्त्री गुलामों की तरह जीती है जिसकी इच्छा और भावनाओं की कोई परवाह नहीं करता बल्कि वह तरह–तरह की जिम्मेदारियों से लदी होती है।

इस आत्मकथा की यह भी खासियत है कि यह प्रभा के जीवन काल में ही प्रकाशित हो गई थी, और इसी कारण निजी जीवन के प्रसंगों के सामने आने से उन्हें काफी कुछ झेलना पड़ा पर उन्होंने जीवन में कभी भी हार नहीं मानी।

आत्मकथा में लेखिका प्रभा खेतान की वेदना का स्वर मुखरित होता हुआ प्रतीत होता है। वे अपने बारे में लिखती हैं में प्रभा खेतान, में कौन हूँ? क्या मेरी कोई पहचान नहीं है? मैं सधवा नहीं। मैं कोठे पर बैठी हुई रण्डी भी नहीं.... क्योंकि मैं अपनी देह का व्यापार नहीं करती। मैं किसी पर निर्भर नहीं, स्वावलंबी हूँ। अपना भरन–पोषणा खुद करती हूँ। स्वेच्छा से एक जीवन का बरण किया है। तब मैं क्या कहूँ? में अबोध हूँ, अबोध माने मूर्ख। दीन–दुनिया से बेखबर, समाज की सच्चाइयों से दूर। मैं विवाहित होकर किसी से अफेयर चलाए रखती। कुछ दिनों तक सब ठीक था। लोग स्वीकार लेते, आवारगी को समाज स्वीकार लेता है। मगर अविवाहित रहकर एक विवाहित पुरुष, पांच बच्चों के पिता के साथ टंगे रहना, भला यह भी कोई बात हुई।''५ इन शब्दों में यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने एक स्वतंत्र स्त्री के जुझारु व्यक्तित्व का चित्रण किया है जो काफी स्पष्टवादी भी है।

लेखिका पुरुष के चरित्र को स्पष्ट करते हुए कहती है– 'देखो लड़की, तुम अभी नादान हो। बस इतना समझ लो कि पुरुष ने अपने स्वार्थ में धर्म, समाज और कानून को बनाया है, औरत ने तो बस अभी अभी अपने अधिकारों के बारे में बोलना शुरु किया है।''६ आत्मकथा में अपनी एक सोच है। प्रभा ने आत्मकथा में पश्चिमी संस्कृति और वहां की औरतों की समस्या को भी उकेरा है। प्रभा खेतान की आत्मकथा एक विशिष्ट आत्मकथा है, जहाँ वह परंपरागत मान्यताओं के खिलाफ जाकर अपनी अनुभूति की सच्ची अभिव्यक्ति करती है और अपने जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों को सामने लाती है। स्त्री जीवन से जुड़ी समस्या, उनकी अस्मिता के लिए संघर्ष प्रभा जी के लेखन का केन्द्रविन्दु है। 'अन्या से अनन्या' में वे स्त्री के संदर्भ में पितृसत्तात्मक समाज से मुक्ति, आर्थिक मुक्ति को दर्ज करती है तथा स्त्री के व्यक्तित्व के नये पहलूओं को सामने लाती है।

बलात्कार का शिकार होती कन्या शिशु की दमित मानसिकता को भी लेखिका ने चित्रित किया है। प्रभा का भोगा यथार्थ उनकी आत्मकथा में प्रतिबिम्बित हुआ है जो आज भी अपनी प्रासंगिकता के साथ समाज में कलंक के रूप में मौजूद है। बचपन में हुए यौन उत्पीड़न का दर्द लेखिका को बाद में सामान्य रहने नहीं देता। इसके माध्यम से लेखिका उस समस्या की ओर इशारा करती है, जिनका शिकार कन्या शिशु आज भी लगातार हो रही है।

यह आत्मकथा अस्मिता की तलाश में निकली ऐसी स्त्री की कथा है, जिसने परंपरागत मान्यताओं और प्रचलित मानदंडों के खिलाफ स्वयं को खड़ा किया। प्रभा की लेखनी से हाशिये पर पड़ी महिलाओं को एक दृढ़ आधार मिला, ताकि वे भी उन्मुक्त गगन में सांस ले सके और अपने अस्तित्व को पहचान सकें। नारी की बदलती हुई स्थिति पर प्रभा कुमारी लिखती हैं– ''आज नारी ने पुरुषों द्वारा उधोदी पर गढ़े गये 'स्पीड़ ब्रेकर' को तोड़ डाला है और वह बाहर के क्षेत्रों में सशक्त होकर काम कर रही है। इस उपाय से सारी नारियों का सशक्तिकरण बढ़ेगा। इस अर्थ में प्रभा खेतान जैसी लेखिकाएं स्पीड ब्रेकर तोड़ने की प्रमुख दावेदार है, जो नैतिकता के नये मानदंड स्थापित करती हैं। और परंपरागत दकियानूसी विचारधाराओं को एक सिरे से खारिज करती है।''७

निष्कर्ष :—

इस आत्मकथा से इतना तो स्पष्ट है कि प्रभा ने इस पुरुषप्रधान समाज में अपनी अस्मिता की लड़ाई स्वयं लड़ी और अपनी अलग पहचान कायम की तथा स्त्री मुक्ति के मार्ग की बाधाओं को पहचानकर उसे दूर करने का पूरा प्रयत्न किया। प्रभा के आत्मकथा की विशेषता है कि जीवन की अस्मिता संबंधी बातचीत से वह शुरू होती है पर अंत तक आते आते प्रभा सारी स्त्री जाति को संशक्तिकरण की प्रक्रिया से जोड़ते हुए अपने शोषण से अवगत करती है। यद्यपि आत्मकथा में कई ऐसे प्रसंगों की चर्चा है, जब प्रभा की भावना एक आम औरत की जैसी होती है और वह लगातार अपमानित भी होती है पर यह स्थिति प्रभा को कमजोर नहीं करती बल्कि बृहत्तर स्तर पर उन्हें विद्रोह स्त्री अस्मिता के संघर्ष के लिए प्रेरित करता है।

इस प्रकार स्त्री अस्मिता की दृष्टि से प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' काफी महत्वपूर्ण है जहाँ वह स्त्री के लिए तय मानक के विपरीत जाकर अपनी स्वतंत्र अस्मिता की पहचान करती है। यह आत्मकथा एक स्त्री के नये मानक गढ़ने की भी कथा है।

संदर्भ ग्रंथ:—

१. खेतान प्रभा —'अन्या से अनन्या'— राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,सन २००७ ई.स
२. डॉ. कौर बलवंत—आत्मकथा के निकष पर 'अन्या से अनन्या' पाठशाला सन २०११ ई. स
३. डॉ. जूही शुक्ला, 'वर्तमान परिदृश्य और स्त्री रचनाकार', आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद सं सन् २०११ ई.स

⌘⌘⌘

34

नागार्जुन की कविताओं में वंचित एवं शोषितों का चित्रण

प्रा.शौकत आतार
हिंदी विभाग प्रमुख,
आर्ट्स, कॉमर्स अॅण्ड सायन्स कॉलेज,
नागठाणे, जि.सातारा

हिंदी के प्रगतिवादी कवियों में मुख्य रूप से सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, रामधारी सिंह दिनकर, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, गंगेय राघव, शिवमंगल सिंह सुमन, त्रिलोचन, रामविलास शर्मा आदि प्रमुख है। इन कवियों ने मार्क्सवाद से प्रभावित होकर अपने काव्य में आम आदमी या सर्वहारा वर्ग की समस्याओं को वाणी देने का काम किया। इन कवियों में नागार्जुन का अपना विशेष स्थान है। जनकवि नागार्जुन ने उपेक्षित, शोषित, मजदूर, कृषक वर्ग की समस्याओं को यथार्थता से अपने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उन्होंने आम आदमी की पीडा एवं दुःख को अपने काव्य में कलात्मकता से प्रकट किया। नागार्जुन का लेखकीय व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने 'युगधारा', 'प्यासी पथराई आँखें', 'सतरंगी पंखोवाली', 'आखिर ऐसा क्यों कह दिया'एवं 'भस्मांकुर' आदि काव्य संग्रहों का सृजन किया। अजय तिवारी के मतानुसार " निराला ने इतिहास और दायित्व के गंभीर बोध से संपन्न होकर जिस नये यथार्थवाद का विकास किया वह भक्ति आंदोलन और भारतेंदु युग की संघर्षशील परंपरा की अगली कडी है। नागार्जुन यह कडी तोडकर आगे नहीं बढे, इस कडी से जुडकर, उसकी संघर्षशील आस्था से अनुप्राणित होकर उन्होंने अपनी कविता में अपने ढंग से अपने समय की चुनौतियों को स्वीकार किया।"१ अर्थात आधुनिक